HINDUI.

Miscellaneous Series.] *No.* 16.

A RELIGIOUS ADDRESS.

धर्म्मोपदेश।

हे मित्रो तुम्हारी मुक्ति किस प्रकार से होगी इस बात की ईश्वर के भक्तों को नित्य चिंता रहती है परन्तु जो लोग इस बात से अचेत रहते हैं सो दिखाते हैं कि वे अपने अनमोल प्राण के बैरी हैं और घोर नरक के मार्ग में चलेजाते हैं और उनके सिर पर ईश्वर का कोप झूम रहा है, सो हे प्रिय तुम अपने बचने की चिंता करते हो कि नहीं अथवा इस के विरुद्ध ईश्वर की आज्ञा को उलंघन कर कर के पाप कर्म में लवलीन रहते हो और इस रीति से ईश्वर के कोप को अपने सिर पर बढ़ाते जाते हो, परमेश्वर ने दया कर के तुम्हें मनुष्य का जन्म दिया है, क्या तुम लोग इस बात को पल भर नहीं सोचते हो, क्या संसार के धन और सुख और बड़ाई और जगत के राज रंग में लिप्त रहते हो, यदि योंहीं है तो इन बातों से दिखाते हो कि पाप में डूबे होके नरक के अधिकारी हो, यदि तुम लोग चिंता और परिश्रम कर कर के लाखों रुपया कमाओ और धनी होके जगत के सुख में अपने समय काटो तथापि ईश्वर तुम्हारे पाप को

देख के तुम्हें अनंत पीडा में डालेगा तो क्या लाभ होगा, तुम्हारा धन और संपत्ति, तुम्हारी जात कुटुंब ईश्वर के आगे तुम्हें न बचावेंगे तुम लोग आप जानते हो कि ऐसी दशा में निश्चिंत न रहा चाहिये, क्योंकि ईश्वर धर्मी है, और वुह धर्म से पाप का बिचार करेगा, और पाप का फल यही है कि मरने के पीछे घोर नरक में पड़ना जहां रोना और दांत किड़मिड़ाना और अनंत पीड़ा में सदा काल कष्ट पटाना है, सो हे मित्रो इन बातों को जान जान के और सुन सुन के क्या तुम्हें तनिक भी चिंता नहीं होती और ईश्वर ने भी तुम्हें बूझ समझ दिया है और तम्हारे बिचार से भी सूझ पड़ेगा कि तुम पापी हो अथवा नहीं, और जैसा कि बज़त लोग पूछते हैं कि पाप क्या है, सो अब उस बात का उत्तर देते हैं.

प्रश्न. पाप क्या है.

उत्तर. ईश्वर को बिसराना, जन्म दाता को छोड़ कर औरों की आशा करना, यही पाप है, अद्वैत ईश्वर को छोड़ कर औरों को रोप के उन्हें भजना यही पाप है, कर्त्ता को बिसरा के कृत्य को पूजना यही पाप है, निराकार ईश्वर को छोड़ कर मूर्ति को पूजना, यही पाप है, परमेश्वर का नाम अपने अशुद्ध होंठ से वृथा लेना, यही पाप है, अपने माता पिता का, और बड़ों का निरादर करना, व्यर्थ क्रोध करना, और गाली देना, और कुबचन बोलना, यही पाप है, पराई स्त्री की ओर कुदृष्टि से देखना, और मन में अशुद्ध और मलीन चिंता करना,

यही पाप है, चोरी करना, ठगविद्या करना, जूआ खेलना, यही पाप है, औरों की बुराई और घटती करना और उन से डाह और बैर रखना यही पाप है, झूठी किरिया खाना, झूठ बोलना यही पाप है, परमेश्वर के दिये ऊए से संतोष न करना, परोसी की किसी वस्तु की लालच करना यही पाप है, परन्तु पापों को कहां लों वर्णन करों, जब लों तुम लोग सच्चे ईश्वर को नहीं चीन्होगे, और अपने अपने पाप से उदास न होओगे, और उस की दया को ग्रहण न करोगे तब लों जो कुछ करते हो सो सब के सब केवल पापही में गिने जाते हैं, और पाप करना, ईश्वर का बैर करना है, उस को तुच्छ समझना है, यद्यपि उस में इतनी सामर्थ है, कि पल भर में वुह आकाश और पृथिवी को नाश कर सक्ता है, और क्षण भर में दूसरा बना सक्ता है, परन्तु जैसी उस में सामर्थ है, तैसा उस में संतोष और धीरज भी है, इस लिये उस के बैरी होते ऊए तुम लोग जीते, चलते, फिरते हो परन्तु वुह नित्य संतोष न करेगा, और सदा पापियों का बैर न सहेगा, परन्तु मरने के पीछे वुह सब का न्याय करेगा, सो हे मित्रो, इन बातों को सोचो, सोचो, और मन से बूझो, अभी से चिंतायमान होओ, अभी से ईश्वर के कोप से बचने को चटक करो क्योंकि यही मुक्ति पाने का दिन है, जीते जी पाप से बचने का समय है इस लिये कि परमेश्वर बड़ा दयाल है और उसने तुम्हारे बचने का उपाय किया है उसने सारे जगत के कारण अपने पुत्र ईसामसीह को

भेजा जिस ने मनुष्यों के लिये अवतार लेके अपने प्राण को बलि दिया है, जिसतें मनुष्य अपने पाप से बचें और नरक की पीड़ा में न पड़ें. परन्तु जिसमें वे प्रभु की दया को सोच सोच के अपने अपने पाप से उदास होवें, और उस का शरण लेवें, उसी पर आशा रक्खें और उसी के नाम से प्रार्थना करें, अपने पाप को पहिचान लेवें, और आगे को उसके धर्मात्मा की सहाय से धर्म मार्ग पर चलें, जिसतें ईश्वर की महिमा और उनके प्राण का कल्याण सदा होवे यही हम लोग चाहते हैं, और इसी लिये तुम्हारे पास आते हैं, और तुम्हें उपदेश करते हैं, और तुम्हें श्री मुख बचन की पुस्तक भी देते हैं सो हम लोगों से उदास मत होओ और हमसे बैर न करो परन्तु हमें अपना सच्चा मित्र समझो तब तुम्हारा भला होगा और ईश्वर भी प्रसन्न होगा, पर क्या जाने इन बातों को सुन के, अथवा पढ़ के कोई कहे कि क्या हम लोगों के पास ईश्वर की पुस्तक नहीं है कि हम तुम्हारी पुस्तकों को ग्रहण करें, हां तुम्हारे पास पुस्तक तो हैं; इसमें संदेह नहीं, और यह भी हम लोग जानते हैं कि तुम्हारे पास बहुत पुस्तक हैं, और भिन्न भिन्न पथ, और अनेक मत भी हैं, जो एक ही पुस्तक और एक ही मत तुम लोगों में होते, तो इतना संदेह भी न होता. पर जब कि लिखा है कि अट्ठासी सहस्र ऋषी ने अट्ठासी सहस्र मत खड़ा किया है, तो विचारी पुरुष के आगे बड़ा संदेह होता है कि उन्हों ने अपना अपना मत खड़ा किया है, क्योंकि परमेश्वर तो एकही है

और तुम लोग आप जानते हो कि उसका मत भी एकही चाहिये क्योंकि वुह सच्चा है, और यदि उस का वचन टलजाता तो ईश्वर आपही काहे को अचल कहलाता सो वुह अपने वचन को कभी उल्लंघन न करेगा, और तुम लोग जानते हो कि तुम्हारोएक मता दूसरी को, और एक चट्ठी दूसरे को, और एक वेद दूसरे को, और एक शास्त्र दूसरे को, खंडन करता है ऐसी ऐसी बातों से जाना जाता है, कि यह सब मन मता है, और ईश्वर के मत नहीं हैं. और आज लों किसो ने मन मता से कभी ईश्वर को नहीं पाया, और पा नहीं सक्ता इसी लिये दयाल परमेश्वर ने जगत के लिये आपही एक मता प्रगट किई है और उस में दिखाया है कि उस ने मनुष्य को प्रथम में पवित्र बनाया, परन्तु वुह ईश्वर की आज्ञा को टाल के पापी ऊआ, तभी से उस के बंश भी पापी होने लगे और सब के सब पाप के स्वभाव रखते हैं, इसी लिये मनुष्य आप से आप ईश्वर का ठीक भेद पा नहीं सक्ता, पर ईश्वर ने दया कर के अपना भेद जहां लों मनुष्य के लिये भला था आपही प्रगट किया है और मनुष्य को दिया है परंतु मनुष्य पाप के मारे अशक्त है, और आप को पाप से छुड़ा नहीं सक्ता, पर परमेश्वर ने मनुष्य को छुड़ाने का उपाय आप ही किया है, हां उसने अपने पुत्र ईसा मसीह को भेजा जिसतें वुह पापियों का भार उठावे, और पापीके लिये मुक्ति का द्वार खोल देवे, और उस प्रभु ने वैसाही किया उस ने मनुष्य के लिये

अवतार लिया, और मनुष्यके पाप की संती आप दंड उठाया, और आप अपने प्राण को प्रायश्चित में दिया, और तीसरे दिन फिर जी उठा, और स्वर्ग के जाने के समय में उसने अपने शिष्यों को यही आज्ञा किई, कि तुम लोग सारे जगत में जाओ और हर एक प्राणी को मंगल समाचार सुनाओ और जो जो मुझ पर विश्वास लावेंगे, और अपने अपने पाप से पछता के मुझ पर आशा रक्खेंगे, सो अनंत जीवन पावेंगे पर जो मुझ पर विश्वास न लावेंगे सो अनंत पीड़ा में डाले जायेंगे, इतनी बात कहिके प्रभु अपने राज धाम को उठ गया और धर्मात्मा का दान अपने विश्वासियों को दिया, और उसी के सहाय से वे संसार को उपदेश करने लगे, और धर्मात्मा की सहाय से लोगों का चित फेरने लगे, और सब के सब अपने सनातन का मिथ्या धर्म, और मन मता को त्याग त्याग प्रभु ईसा के धर्म को ग्रहण करते गये, इसी रीति से प्रभु ईसा की मता जगत में फैल गई और उसी पर ब्रह्म की आज्ञा से, और बड़ी दया से तुम लोगों के पास यह मंगल बचन प्रचारा जाता है, सो यदि तुम लोग भी मिथ्या मता को छोड़ छोड़ के सत्य धर्म को ग्रहण करोगे तो तुम लोग भी जीवन मुक्ति पाओगे, और प्राण त्यागने से स्वर्ग लोक में बास करोगे पर इस को कुछ अनुचित बात न समझो क्योंकि तुम्हारे बड़ों ने भी आगे ऐसा किया था जैसा लिखा है.

दोहा.

जानि सनातन धर्म यह साजे सब संभार
देव पूजिवे को सकल गोपी गोप उदार
लखि हरि हंसि बोले तिन्हें जानि बूझ तुम मीत
धर्म पंथ तजि चलत हो यह तो बड़ी अनीत
कियो बड़ेन तो भूलि के कियो न करि कछु ज्ञान
नहीं सनातन धर्म यह कहों बचन परमान.

सब मनुष्यन को चाहिये कि मिथ्या को छोड़ के सत्य को ग्रहण करें क्योंकि प्रभु ने कहा है कि जो मुझ पर विश्वास न लावेगा उसके सिर पर ईश्वर का कोप धरा रहता है और जो उस भूल और बैर में मरेंगे सो नरक की अकथ पीड़ा में डाले जायेंगे, सो हे प्रिय लोगो अपने प्राण पर दया करके इस बिनती को मत टालो, और प्रभु के आगे भी मेरी यही बिनतो है कि वही तुम्हारे चित को फेरे, जिसतें इस बचन को टाल के अपने अपने प्राण के घाती न होओ परन्तु ईश्वर के धर्म मार्ग को मन, बच, काया, से ग्रहण करो, जिस में तुम लोग भी ईश्वर के लेपालक पुत्र होओ और मरने पर स्वर्ग राज्य को प्राप्त करो.

बिनती.

हे अति दयाल ईश्वर तूही इन सभों पर दया कर, तूही इन के चित को फेर दे, तूही इन का भूल और पाप

दिखा, तूही इन से पश्चाताप करा, तूही धर्मात्मा इन्ह दे, और अपने पुत्र ईसा मसीह के शरण में जीते जी इन्हें ला, और अपने ध्यान और प्रार्थना में इन्हें लवलीन रख, जिसतें अंत में इन का कल्याण होवे. आमीन.

CALCUTTA:

PRINTED AT THE CHURCH MISSION PRESS, FOR THE CALCUTTA CRHISTIAN TRACT AND BOOK SOCIETY.